# आदर्श मनुष्य वह है, जो सत्कर्मों का फल ईश्वर को करे समर्पित

श्री श्री आनंदमूर्ति

आध्यात्मिक गुरु व आनंद मार्ग के संस्थापक


मनुष्य जानता है कि वह चिर-काल के लिए इस धरती पर नहीं आया है. आदर हो या अनादर हो, वह छोड़ कर जायेगा ही. मनुष्य चिर दिन के लिए नहीं रहेगा. तब मनुष्य को क्या करना होगा, उसे कैसे चलना होगा? कुछ लोग कहते हैं- देखो, अच्छा काम करते जाओ, सत्कर्म करते जाओ. उससे मन को तृप्ति मिलेगी और सत्कर्म का शुभ फल तो है ही, किंतु सत्कर्म क्यों करते जा रहे हो, इसका उत्तर तो चाहिए?

आज का आलोच्य विषय है- आदर्श मनुष्य की जीवनचर्या कैसी होनी चाहिए? मनुष्य पृथ्वी में बहुत दिनों तक रहने के लिए नहीं आता है. वह आता है, कुछ दिन रहता है, काम-काज करता है, खाता-पीता है, दूसरों का उपकार करता है, राग-अभिमान करता है, अभाव अभियोग करता है, उसके बाद सबकुछ समाप्त हो जाता है, हमेशा के लिए वह सो जाता है. यही है मनुष्य का जीवन-सुख-दुःख, भाषा-आकांक्षाओं के परिवृत्त जीवन. इसमें भी मनुष्य को एक नियम मान कर चलना पड़ता है. किसी भी तरह छंद वहिर्भूत होकर नहीं चला जा सकता है. एक छंद मान कर चलना पड़ता है. मनुष्य जब पृथ्वी में आया है, तो वह भी जानता है, दूसरे लोग भी जानते हैं कि वह चिर-काल के लिए नहीं आया है. आदर हो या अनादर हो, वह छोड़ कर जायेगा ही. मनुष्य चिर दिन के लिए नहीं रहेगा. तब मनुष्य को क्या करना होगा, उसे कैसे चलना होगा?

कुछ लोग कहते हैं- देखो, अच्छा काम करते जाओ, सत्कर्म करते जाओ. उससे मन को तृप्ति मिलेगी और सत्कर्म का शुभ फल तो है ही, किंतु सत्कर्म क्यों करते जा रहे हो, इसका उत्तर तो चाहिए? कहते हैं मन को शांति मिलेगी और सत्कर्म का फल भी मिलेगा. क्यों मिलेगी? मन को शांति क्या शुभ फल की प्रत्याशा है इसलिए?

कृष्ण ने कहा है- कर्म करने से कर्म का प्रतिकर्म है. साथ-साथ कर्म का बंधन भी है और वह बंधन जब तक खुल नहीं जाता है, तब तक कर्म-चक्र में घूमना पड़ेगा, बार-बार पृथ्वी पर आना पड़ेगा. यहां तक कि जो जैमिनी पंथी हैं अर्थात जो स्वर्गवादी हैं, वे भी कहते हैं- सत्कर्म करने से मनुष्य स्वर्ग में जाते हैं और जब उनका कर्म का शुभफल भोग समाप्त हो जाता है, तब वे स्वर्ग से उतर कर फिर मनुष्य का शरीर लेते हैं. हमलोग दार्शनिक विचार से ऐसा नहीं मानते हैं, क्योंकि स्वर्ग नाम की किसी वस्तु को हमलोग अलग अस्तित्व के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं, किंतु यह ठीक है कि सत्कर्म का सत्फल एक दिन समाप्त होगा ही. तब क्या होगा?

महाराज युधिष्ठिर ने कहा है- तो हमलोग देखते हैं कि कर्म लेकर रहने के लिए केवल अच्छा काम करो, इतना कहना ही काफी नहीं है. अच्छा काम करने से उसका अच्छा फल भी भोगना होगा और फल भोग समाप्त होने पर फिर पृथ्वी में आना होगा. पृथ्वी पर आने के बाद फिर सत्कर्म ही होगा, ऐसी कोई बात नहीं है. असत्-कर्म भी हो सकता है, इसलिए कर्म चक्र में चक्कर खाना ही होगा और लगता है कि जैसे इसका कोई अंत नहीं है. किंतु अंत में युधिष्ठिर ने और दो बातें कही हैं - काम मैं किये जाता हूं, किंतु फल मैं नहीं चाहता हूं. मैं फल को ईश्वर में उसी वक्त समर्पित कर देता हूं, अर्थात अपने अशुभ कर्म के अशुभ फल का भोग करने के लिए मैं राजी हूं, किंतु अपने शुभ कर्म का शुभ-फल मैं नहीं चाहता हूं. मैं ईश्वर को दे देता हूं. यह बात कौन कह सकता है? वही कह सकता है, जिसको ईश्वर के प्रति दृढ़ भक्ति है. वह स्वयं को जितना प्यार करता है, ईश्वर को उससे अधिक प्यार करता है. स्वयं के प्रति उसका जितना आकर्षण है, जितनी ममता है, परमपुरुष के प्रति उससे भी अधिक ममता है. केवल वही ऐसा कह सकता है. दूसरा कोई नहीं कह सकता है. और जो ऐसा कह सकता है, वह

तो भक्तिवादी है. वह तो कर्मवादी नहीं है. इसलिए कर्म करते जाओ, और कुछ मत सोचो- यह बात उसे कहना वृथा है. यह बात उसी से कही जा सकती है, जो भक्ति में प्रतिष्ठित है. यह बात तो कर्मवादी की बात नहीं हुई. और यदि कार्यवाद की बात ही कहूं, तो कहना होगा कि उसमें कोई शेष निष्पत्ति नहीं होगी.

कुछ लोग कहते हैं- जगत के लिए क्लेश स्वीकार करते जायेंगे. सभी चीजों का एक अच्छा फल है. यह जो क्लेश स्वीकार करते चल रहे हैं, इसका भी एक अच्छा फल है. एक नब्बे या सौ साल की वृद्धा विधवा भी क्लेश स्वीकार करती हुई चल रही है, इस आशा में कि इस क्लेश का भी एक दिन प्रतिदान मिलेगा, सुफल भोग करूंगी, स्वर्ग में जाऊंगी. अब हमलोग विचार करें कि इस प्रकार का जो क्लेश है, चाहे परिवार के लिए हो या और किसी के लिए हो, समाज के लिए हो अथवा और किसी के लिए हो, इसका मूल्य क्या है? इस पृथ्वी में कुछ भी मूल्यहीन नहीं है. किसी का क्लेश भी मूल्यहीन नहीं होता. तो क्या वही मनुष्य-जीवन की चरम सार्थकता है? केवल क्लेश सहन करते जाना? क्लेश सहन करते जाना एक लक्ष्यहीन क्रिया है, अर्थात क्यों क्लेश सहन कर रहा हूं, इस संबंध में कुछ नहीं जानता हूं. जानना चाहता भी नहीं हूं. केवल क्लेश सहन करता जाता हूं. क्लेश सहन करने की खातिर. यह तो एक अर्थहीन चीज है. यह तो वैसा ही हुआ, जैसे नाव चलाते जा रहा हूं. कहां जा रहा हूं, मुझे मालूम नहीं है. चलाना जरूरी है, इसलिए चला रहा हूं. यह एकदम अर्थहीन है. इस प्रकार नाव चलाने से हाथ में दर्द हो जायेगा और एक दिन नाव चलाने का सामर्थ्य नहीं रहेगा और तब नाव के साथ डूब मरना होगा. मनुष्य के समस्त साधना के लक्ष्य होंगे परमपुरुष. उन्हें सामने रखकर जो करना होगा, करेंगे. उन्हें भुला कर कुछ नहीं करेंगे.

**(प्रस्तुति : दिव्यचेतनानंद अवधूत)**

## ॥ प्रेरक-प्रसंग ॥

### आनंद की वर्षा

एक प्रभु यीशु एक बार झील के किनारे उपदेश दे रहे थे. वह बता रहे थे- एक बार एक किसान ढेर सारे बीज लेकर अपने खेत में बोने के लिए जा रहा था. जाते समय रास्ते में कुछ बीज गिर गये. उनमें से कुछ बीज पक्षियों ने चुग लिये. कुछ बीज पथरीली जमीन पर गिर गये, तो कुछ नमी वाली जमीन पर गिर गये. पथरीली जमीन पर बीजों की जड़ें अधिक परिपक्व नहीं हो पायीं, इसलिए वे जल्द ही सूख गये. बाकी के बीज उपजाऊ जमीन पर गिरे और उनकी बालियों में दाने भर आये. इतना कहने के बाद प्रभु यीशु शांत हो गये.

कुछ देर बाद बाद उन्होंने रुक कर कहा कि प्रभु का उपदेश देनेवाला गुरु बीज बोनेवाले उस किसान की तरह होता है. वह अपने भक्तों के मन एवं हृदय में परमात्मा का संदेश रूपी बीज बोता है, लेकिन कुछ भक्त पथरीली धरती की तरह होते हैं. ऐसे लोगों को अपने गुरु पर तुरंत विश्वास होता है और तुरंत विश्वास टूट भी जाता है.

ऐसा इसलिए है, क्योंकि उन्हें सांसारिक चिंताओं ने वशीभूत किया हुआ होता है. शेष भक्तों का हृदय उपजाऊ होता है. ऐसे भक्त संदेश को श्रद्धा पूर्वक ग्रहण कर लेते हैं. वे स्वयं इस आनंद की वर्षा में भीगते हैं और दूसरों को भी भिगोते हैं. यही जीवन की असल सच्चाई है.

इस दुनिया में ज्ञान चारों ओर फैला है. जरूरत है तो हम मनुष्यों को उसे अमल में लाने की, क्योंकि ज्ञान का प्रकाश ही अज्ञानता के अंधकार को हमेशा के लिए मिटा सकता है.

## ॥ सुवचन ॥

तुम जीवन में तभी अर्थ पा सकते हो, जब तुम इसे निर्मित करते हो. जीवन एक कविता है, जिसे लिखा जाना चाहिए. यह गाया जाने वाला गीत, किया जाने वाला नृत्य है.
- ओशो

तुम्हें कोई पढ़ा नहीं सकता, कोई आध्यात्मिक बना नहीं सकता. तुमको सब कुछ खुद अंदर से सीखना है. आत्मा से अच्छा कोई शिक्षक नहीं है.
- स्वामी विवेकानंद

अगर आप किसी की खुशियां लिखने वाले पेंसिल नहीं बन सकते हैं, तो कम-से-कम एक अच्छा-सा इरेजर तो बन ही सकते हैं, जो उनके दुखों को मिटा सके.
- सिस्टर शिवानी

## ॥ तीज-त्योहार ॥

### पौष पूर्णिमा पर स्नान और दान का है विशेष महत्व

साल 2019 की पहली पूर्णिमा की तिथि 21 जनवरी से शुरू हो रही है. शास्त्रों के अनुसार, मोक्ष की कामना रखने वालों के लिए पौष माह की पूर्णिमा बहुत ही शुभ होती है. अमावस्या को कृष्ण पक्ष और पूर्णिमा को शुक्ल पक्ष का अंतिम दिन होता है. पौष माह की पूर्णिमा होने के कारण इसे पूषी पूर्णिमा भी कहते हैं. उत्तर भारत के हिंदुओं के लिए यह बेहद खास दिन होता है. इस दिन किये जप, तप और दान का विशेष महत्व होता है. इस दौरान भगवान विष्णु की पूजा का भी विधान है. पौष माह की पूर्णिमा को मां दुर्गा के भक्तों की पुकार पर माता शाकंभरी ने देवी रूप में अवतार लिया था, इसलिए इसे मां शाकंभरी जयंती के रूप में भी मनाया जाता है. इस दिन मां भवानी की भी पूजा का विशेष विधान है. इसके बाद माघ माह की शुरुआत होती है.

ज्योतिषीय दृष्टिकोण से देखें, तो पौष माह में सूर्य का व पूर्णिमा पर चंद्रमा का आधिपत्य है. सूर्य-चंद्र का यह अद्भुत संयोग मात्र पौष पूर्णिमा को ही होता है. साथ ही रवि पुष्य योग, सर्वार्थ सिद्धि योग भी है. यानी किसी भी शुभ कार्य के लिए मंगलकारी है. पंचांग के अनुसार, जब शुक्ल पक्ष चल रहा होता है, तो उसके अंतिम दिन यानी 15वें दिन को पूर्णिमा कहते हैं, वहीं जब कृष्ण पक्ष का अंतिम दिन होता है, तो वह अमावस्या होती है. इस दिन व्रत-स्नान करना बहुत फलदायी माना गया है. मान्यता है कि जो व्यक्ति इस दिन प्रातः स्नान करता है, वह मोक्ष का अधिकारी होता है, इसलिए इसे मोक्षदायिनी पूर्णिमा भी कहते हैं. इस दिन गंगासागर, प्रयाग, हरिद्वार, त्रिवेणी आदि पवित्र नदियों में भारी संख्या में लोग स्नान के लिए पहुंचते हैं. स्नान के पश्चात क्षमता अनुसार दान भी करना चाहिए.

**पूर्णिमा तिथि आरंभ** - 14:19 बजे से (20 जनवरी, 2019)
**पूर्णिमा तिथि समाप्त** - 10:46 बजे (21 जनवरी, 2019)

## ॥ एस्ट्रो टिप्स ॥

### शुक्र को नाराज करने से बनता है दुख का कारक

**ज्योतिषशास्त्र** में शुक्र ग्रह को प्रेम का प्रतीक माना गया है. अगर जातक की कुंडली में शुक्र मजबूत है, तो जीवन में रोमांस के साथ भोग-विलासिता में कमी नहीं रहती. पुरुष की कुंडली में शुक्र स्त्री का प्रतीक है, इसलिए जो व्यक्ति स्त्री को कष्ट देता है या जीवनसाथी के लिए परेशानियां पैदा करता है, वह शुक्र को नाराज करता है. घर को अस्त-व्यस्त रखने या गंदे-मैले वस्त्र पहनने से भी शुक्र का अशुभ प्रभाव पड़ता है. चूंकि शुक्रवार का संबंध शुक्र ग्रह से है, इसलिए इस दिन सफेद वस्त्र पहनें और भोजन करने से पहले गाय के लिए निवाला निकालकर अपने हाथों से खिलाना अतिफलदायी है. शुक्र ग्रह की मजबूती के लिए स्नान वाले जल में थोड़ा चंदन मिलाएं और स्वच्छ वस्त्र पहनकर सफेद चंदन का तिलक करें. संतान प्राप्ति के इच्छुक लोग शुक्रवार को हरसिंगार का पौधा लगाएं. इससे घर में दरिद्रता नहीं आती. सकारात्मक ऊर्जा का वास होता है.

## ॥ ज्योतिष ॥

### किन बातों पर निर्भर करता है भाग्य-दुर्भाग्य


**मार्कण्डेय शारदेय,** ज्योतिषविद्


**कहा गया है** - समुद्र-मथने लेभे हरिः, लक्ष्मीं हरो विषम्। भाग्यं फलति सर्वत्र ,न च विद्या न पौरुषम्॥

अर्थात् समुद्र-मंथन में विष्णु को लक्ष्मी मिलीं और शिव को विष. मायने यह कि भाग्य का ही फल सभी जगह मिलता है, विद्या और उद्योग का नहीं. यह कथन अपने उदाहरण से भले ही भाग्यवादी सोच को बल देता हो, पर ज्ञान और उद्यम का सदा महत्व रहा है. ऐसा नहीं होता तो शिक्षा केंद्रों की जरूरत नहीं होती. लोग रात-दिन मेहनत नहीं करते. लक्ष्मी, विष्णु की ही थीं. शिव ने तो स्वयं ही जगत् के कल्याण के लिए विषपान किया था. भाग्य की देन तब कहा जाता, जब स्वतः उन्हें विष उपलब्ध होता!

वस्तुतः भाग्य कर्म का ही फल होता है. कभी किसी गरीब को अचानक राह चलते रत्नों की गठरी मिल गयी या किसी का बहुमूल्य सामान खो गया, तो लोग भाग्यफल कह सकते हैं, परंतु भाग्य भी कर्म का ही अंश है. हां, पूर्वजन्म से भी संबद्ध होने के कारण लोग इसके रहस्य को समझ नहीं पाते. अब ज्योतिषीय आधार पर मूल्यांकन करें, तो जन्म कुंडली के 12 भावों में नौवां भाग्य का है. कुंडली-चक्र 12 राशियों और सात उनके स्वामियों पर आधारित होने से नौवें भाव में कोई भी राशि तथा सूर्य से लेकर शनि तक कोई भी ग्रह उसका स्वामी हो सकता है, लेकिन बृहस्पति इस घर का पदेन अध्यक्ष होता है. यानी बृहस्पति उपयुक्त स्थान में हो, तो सर्वाधिक भाग्यवृद्धि होती है.

शास्त्रकारों के अनुसार, भाग्य का विचार करते समय नवम भाव की स्थिति, उसके स्वामी की स्थिति, भाग्येश जिस भाव में है, उसकी स्थिति के साथ बृहस्पति की भी स्थिति पर ध्यान रखना आवश्यक है. चूंकि भाग्येश अपनी दशा में भाग्यफल देता ही है, भाग्येश जहां रहता है, उसका स्वामी भाग्यकारक एवं लग्नेश भाग्य का प्रेरक होता है, इस कारण इनकी प्रबलता तथा शुभता का अधिक मूल्य है.

नवम भाव के महत्व पर 'जातकाभरणकार' ढुण्ढिराज कहते हैं कि ज्योतिषियों को अन्य भावों की चिंता छोड़ केवल नवम भाव पर ही विचार करना चाहिए. आयु, माता, पिता, वंश- ये सब भाग्य से ही होते हैं.

अब पहले जन्मांग-चक्र में उपस्थित दुर्भाग्य योग पर विचार करें. पराशर का कथन है कि पंचम भाव में राहु हो और भाग्य भाव का स्वामी अष्टम में या अपने नीच स्थान में हो, तो व्यक्ति अभागा होता है-**'हीनभाग्यो भवेत् नरः'**. वह कहते हैं कि नवम भाव में चंद्रमा के साथ शनि हो और लग्नेश नीच राशि में, तो व्यक्ति भिखारी तक हो सकता है.

अन्य आचार्यों के अनुसार दुर्भाग्य के और भी कई कारण हैं; जैसे- चतुर्थ भाव के स्वामी का अष्टम भाव में होना, नवम में पाप ग्रह तथा नवमेश का निर्बल होना, नवमेश का क्रूर राशि में या उस पर नीचस्थ ग्रह की दृष्टि.

कभी-कभी लोग विवाह के बाद दुर्भाग्य के शिकार हो जाते हैं. इसका कारण बताते 'जातकतत्व' कहता है- **'लग्नार्थ-दारपा दुःस्था विवाहात् परतोऽभाग्यम्'**.

अर्थात् लग्न, द्वितीय और सप्तम भाव के स्वामी दुःस्थान (षष्ठ,अष्टम,द्वादश) में हो, तो व्यक्ति विवाह के बाद दुर्भाग्यवान होता है.

भाग्यशाली योग की बात करें तो भाग्य का स्वामी यदि केंद्र (प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, दशम) में अथवा त्रिकोण (पंचम, नवम) में रहे तथा लग्नेश यदि उच्च का रहे, तो व्यक्ति आजीवन सुख-समृद्धि से युक्त होता है -
**नवम-भावपतिः यदि केन्द्रगो,नवम-पंचमगश्च यदा भवेत्। प्रसव-लग्नपतिः यदि तुंगगः, सुख-समृद्धि-युतो मरणान्तकः॥**

## राशिफल

डॉ एनके बेरा

**मेष** रोग-शोक-दुश्चिंताओं से छुटकारा मिलेगा. जमीन-जायदाद संबंधी विवादों का समाधान मिलेगा. सुख-सुविधा के साधन बनेंगे.

**वृष** विपरीत स्थितियों में सुधार होगा. प्रशंसनीय कार्य करने का अवसर मिलेगा. लोकप्रियता का विस्तार. अधूरे कार्य संपन्न होंगे.

**मिथुन** रोजगार में सफलता मिलेगी. लाभकारी वातावरण की शुरुआत होगी. उद्यम में लाभ मिलेगा. विरोधियों का षड्यंत्र विफल होगा.

**कर्क** सदभावनाएं एवं शुभ संदेश प्राप्त होंगे. उद्योग-व्यापार में सफलता. गृहोपयोगी वस्तुओं का संचय करेंगे. सुख-सुविधा की प्राप्ति होगी.

**सिंह** इच्छित कार्य में सफलता मिलने की संभावना है. सामाजिक आदर-सम्मान एवं कर्मबल में वृद्धि होगी. परिस्थितियों में सुधार होगा.

**कन्या** बेरोजगारों में रोजगार संबंधी नयी आशाओं का उदय होगा. धैर्य व साहस से सभी कार्य पूरे होंगे. धनागम के अवसर बढ़ेंगे.

**तुला** घर-गृहस्थी में विविध समस्याओं का समाधान होगा. परिश्रम से इच्छित सफलता की ओर अग्रसर रहेंगे. आर्थिक संतुलन बनाये रखने में सफल होंगे.

**वृश्चिक** नौकरी में स्थानांतरण, पदोन्नति की संभावना है. राजनीतिक संपर्क का प्रभाव बढ़ेगा. चिंतित मनोरथ की सिद्धि होगी. व्यवसाय में शुभ परिवर्तन के योग हैं.

**धनु** विद्या-प्रतिभा का विकास होगा. आत्मविश्वास में वृद्धि होगी. रुके कार्यों में प्रगति होगी. सामाजिक-राजनीतिक व्यक्तियों को अनुकूल अवसर मिलेगा.

**मकर** परिश्रम-प्रयत्न से आजीविका संबंधी चिंता दूर होगी. साहसिक कार्य में सफलता. पारिवारिक सुख-साधनों में वृद्धि. विरोधियों पर विजय मिलेगी.

**कुंभ** लाभकारी प्रयास सफल होंगे. स्वजन-मित्रों का सहयोग रहेगा. स्वाभिमान और स्वावलंबन बढ़ेगा. आमदनी में वृद्धि होगी. परिचय का क्षेत्र बढ़ेगा.

**मीन** बिना विचार किये कोई कार्य न करें. चिंतनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी. परिश्रम का फल मिलेगा. प्रशंसनीय कार्य करने का अवसर मिलेगा.

## शब्दपहेली

730

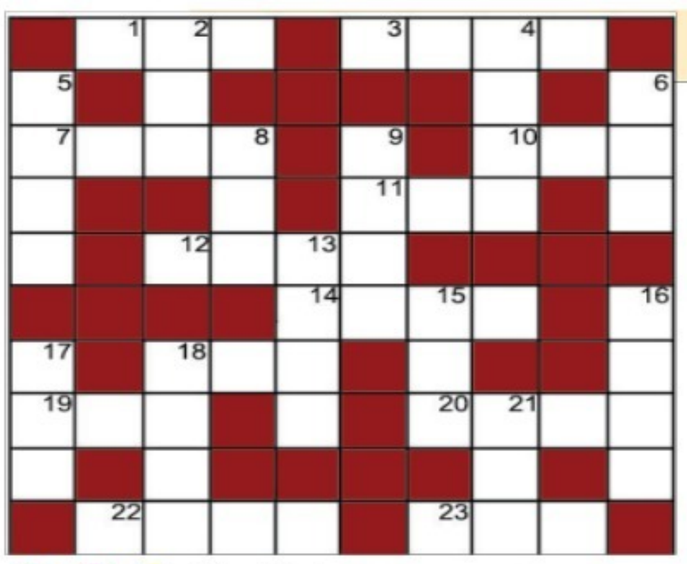

**बायें से दायें**

1 निराकार (3)
2 झिड़की, दुत्कार (4)
7 रावण का एक पुत्र (4)
10 आदर, सम्मान (3)
11 कोई चीज एक जगह से दूसरी जगह रखना (3)
12 प्रफुल्ल, ताजा (2,2)
14. निरंतर घंटा बजने का स्वर (4)
18 सोना, धतूरा (3)
19 अच्छे कर्म (3)
20 गाय की तरह का एक जंगली पशु (4)
22 धातु के टुकड़े का बजना, सिक्कों की आवाज (4)
हैं (4)
21 कन्या, बालिका, बच्ची (3)

### शब्दपहेली उत्तर

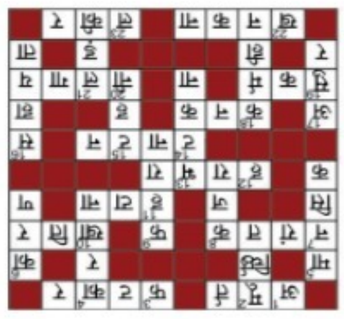

## सुडोकू नवताल

पहेली नंबर 4078

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | 9 | | | 3 | | | 8 | 7 |
| 8 | 7 | | 1 | | 5 | | | |
| | | 2 | | | 9 | | | 4 |
| | 6 | | | | 2 | | 3 | 5 |
| 3 | 8 | | 4 | 1 | 7 | | 2 | 9 |
| 2 | 4 | | 6 | | | | 1 | |
| 7 | | | 3 | | | 8 | | |
| | | | 5 | | 8 | | 7 | 3 |
| 9 | 3 | | | 2 | | | 6 | 1 |

MANGAL SENACHA, BANGALORE

**सुडोकू नवताल - 4077 का हल**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | 4 | 8 | 3 | 9 | 2 | 1 | 5 | 6 |
| 2 | 6 | 9 | 5 | 7 | 1 | 4 | 8 | 3 |
| 3 | 1 | 5 | 4 | 6 | 8 | 9 | 2 | 7 |
| 5 | 7 | 4 | 8 | 2 | 9 | 3 | 6 | 1 |
| 8 | 9 | 1 | 2 | 3 | 6 | 7 | 4 | 5 |
| 6 | 3 | 2 | 1 | 5 | 7 | 8 | 9 | 4 |
| 4 | 8 | 7 | 6 | 1 | 3 | 5 | 2 | 9 |
| 9 | 2 | 6 | 7 | 8 | 5 | 2 | 3 | 8 |
| 1 | 5 | 3 | 9 | 4 | 8 | 2 | 6 | 7 |

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

23 एक सीध में खींची हुई रेखा

**ऊपर से नीचे**

2 बेहोश, अचेत (3)
4 जहां कल-पुर्जे बनाये जाते हैं
5 मां संबंधी (4)
6 हेतु, सबब (3)
8 काजल (3)
9 कपड़े आदि को हवा में पसार
13 भ्रम में पड़ना, रास्ता भूल जा
15 वृक्ष की पतली डाली, शाखा
16 मदद, सहयोग (4)
17 राक्षस, दानव (3)
18 शुभ कर्म नहीं करने वाले को